चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम........दैनिक जागरण........

दिनांक ..5.9.2020.. पृष्ठ संख्या ....3.... कॉलम ....2-7....

मौसम सफेद मक्खी के अनुकूल, इसीलिए गांवों में फसल हुई बर्बाद

जागरण संवाददाता, हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) में शुक्रवार को कपास की फसल में रोगों के प्रबंधन को लेकर वेबिनार आयोजित हुआ। इसमें पौध प्रजनन एवं आनुवांशिकी विभाग द्वारा किसानों को कपास के रोग के साथ कीटों से बचाव के बारे में भी बताया गया। कुलपति प्रो. समर सिंह ने कहा कि मौजूदा समय में यह वेबिनार इसलिए भी जरूरी हो गया है, क्योंकि क्षेत्र में उखड़ा रोग के कारण कपास की फसल पूरी तरह से बर्बाद हो गई है।

कृषि विज्ञानियों ने वेबिनार के माध्यम से किसानों को दवाएं भी बताई, जिनका प्रयोग कर वह कपास की फसल बचा सकते हैं। विज्ञानियों ने बताया कि इस साल मौसम सफेद मक्खी के अनुकूल है। पर्याप्त बारिश नहीं होती तो इसका प्रकोप और भी बढ़ सकता है।

एचएयू में कपास की फसल में रोगों के प्रबंधन को लेकर वेबिनार में जुड़े विज्ञानी। • विज्ञप्ति।

सलाह का पालन करें

अतिरिक्त अनुसंधान निदेशक डॉ. नीरज कुमार ने कहा कि कपास प्रदेश की एक महत्वपूर्ण नगदी फसल है। इसलिए किसानों को इस फसल के लिए कृषि विज्ञानियों द्वारा समय-समय पर दी जाने वाली सलाह व कीटनाशकों को लेकर की गई सिफारिशों का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

रस चूसने वाले कीड़ों से सावधान

कीट विज्ञानी डा. अनिल जाखड़ ने कहा कि कपास की फसल में रस चूसने वाले कीड़ों में सफेद मक्खी, थ्रिप्स व हरा तेला मुख्य हैं, जो फसल को नुकसान पहुंचाते हैं। इनमें सफेद मक्खी सबसे ज्यादा नुकसान पहुंचाती है। इनसे सावधान रहने की जरूरत है। इन कीटों की जानकारी मिलते ही तत्काल कृषि विज्ञानियों से सलाह लें।

कपास की फसल में बेहतर उत्पादन के लिए कीट व रोगों का एकीकृत प्रबंधन जरूरी है। किसान फसल के मुख्य कीट व रोगों की पहचान करने के बाद विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश की गई दवाइयों का ही प्रयोग करें।

प्रो. समर सिंह, कुलपति, एचएयू

खाद व उर्वरकों की दी जानकारी

सस्य वैज्ञानिक डा. करमल मलिक ने एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन पर व्याख्यान दिया। साथ ही विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश की गई खादों एवं उर्वरक उचित मात्रा में डालने के बारे में चर्चा की। वहीं पौध रोग विशेषज्ञ डा. मनमोहन ने कपास फसल की बीमारियों के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि कपास में मुख्य रोग जड़ गलन, पैराविल्ट, पत्ता मरोड़ एवं टिंडा गलन रोग हैं। रेतीली भूमि में पैराविल्ट का प्रकोप ज्यादा होता है।

विज्ञानियों की सलाह : कपास की फसल में बीमारी लगने पर किसान इन दवाओं का करें छिड़काव

- पत्तों पर छिड़काव के रूप में 2.5 किलोग्राम यूरिया प्रति 100 लीटर पानी या पोटैशियम नाइट्रेट (13-0-45) की 2.0 किलोग्राम मात्रा को 200 लीटर पानी की दर से प्रति एकड़ में आवश्यकतानुसार बारी-बारी से प्रयोग करें।
- सफेद मक्खी के लिए स्पाइरोमेसिफेन (ऑबरोन) 22.9 एससी की 240 मिलीलीटर मात्रा या नीम आधारित कीटनाशक (निम्बिसीडीन/ अचूक) की 1.0 लीटर मात्रा या पाइरीप्रोक्सीफेन (डायटा) 10 ईसी की 400 मिलीलीटर मात्रा को 200-250 लीटर पानी की दर से एक एकड़ में आवश्यकतानुसार बारी-बारी से पौधों पर निचली पत्तियों तक छिड़काव करें।
- कपास के पत्ते ज्यादा काले दिखाई दें तो कॉपर ऑक्सिक्लोराइड की 600 ग्राम मात्रा को 200 लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।
- पेराविल्ट बीमारी के संभावित इलाकों में कोबाल्ट क्लोराइड की 2.0 ग्राम मात्रा को 200 लीटर पानी की दर से एक एकड़ में लक्षण दिखाई देने के 24 से 48 घंटों के अंदर छिड़काव करें। जहां सिंचाई या बारिश के बाद ज्यादातर पौधे मुरझा जाते हैं तो उन क्षेत्रों में इस बीमारी की संभावना होती है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम......हरि. भूमि......

दिनांक 5.9.2020 पृष्ठ संख्या......13...... कॉलम......1-3......

कपास की फसल में कीट और रोगों का एकीकृत प्रबंधन जरूरी : वीसी

हरिभूमि न्यूज >>| हिसार

- हकृवि में ऑनलाइन वेबिनार आयोजित
- कृषि वैज्ञानिकों ने कपास के मुख्य रोगों के लक्षण बताए

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में पौध प्रजनन एवं आनुवांशिकी विभाग के कपास अनुभाग द्वारा एक ऑनलाइन वेबिनार का आयोजन किया गया। वेबिनार का मुख्य विषय वर्तमान में ह्यकपास फसल में कीट और रोगों का एकीकृत प्रबंधन था। वेबिनार के शुभारंभ अवसर पर ऑनलाइन किसानों व कृषि वैज्ञानिकों को संबोधित करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि कपास की फसल में बेहतर उत्पादन के लिए कीट व रोगों का एकीकृत प्रबंधन जरूरी है। उन्होंने कहा कि किसान फसल के मुख्य कीट व रोगों की पहचान करने के बाद विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश की गई दवाइयों का ही प्रयोग करें। इसके अलावा फसल में कृषि वैज्ञानिकों की सलाह के बिना कीटनाशकों का छिडकाव नुकसानदायक हो सकता है। हाल ही में कपास की फसल का नष्ट होने में किसानों द्वारा बिना कृषि वैज्ञानिकों की सिफारिश के फसल पर कीटनाशकों के मिश्रणों का प्रयोग करना एक कारण सामने आया है, जिससे कपास की फसल में नमी एवं पौषण के चलते समस्या बढ़ी है। वेबिनार के संयोजक व आनुवाशिकी एवं पौद्य प्रजनन विभाग के अध्यक्ष डॉ. अशोक कुमार छाबड़ा ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। कपास वैज्ञानिक डॉ. ओमेन्द्र सांगवान ने मंच का ऑनलाइन संचालन किया एवं धन्यवाद प्रस्ताव पारित किया। वेबिनार के दौरान संदीप, अक्षय कुमार,तेजराम बघेल, अनिल, दीपक आदि किसान व कृषि अधिकारियों डॉ. अरूण यादव, डॉ. अजय यादव, डॉ. कुसुम चौधरी, डॉ. मंदीप राठी आदि ने विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों से कपास की फसल में मौजूदा समय में आई समस्याओं को लेकर सवाल भी किए, जिनका कृषि वैज्ञानिकों द्वारा बेहतर तरीके से जवाब दिया गया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम .... दैनिक भास्कर ....

दिनांक 5.9.2020 पृष्ठ संख्या ....2.... कॉलम ....8....

कपास की फसल में रोगों का एकीकृत प्रबंधन जरूरी : प्रो. समर सिंह

हिसार | चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में पौध प्रजनन एवं आनुवांशिकी विभाग के कपास अनुभाग ने ऑनलाइन वेबिनार का आयोजन किया। इसका मुख्य विषय 'कपास फसल में कीट और रोगों का एकीकृत प्रबंधन' था। वेबिनार के शुभारंभ पर ऑनलाइन किसानों व कृषि वैज्ञानिकों को संबोधित करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह ने कहा कि कपास की फसल में बेहतर उत्पादन के लिए कीट व रोगों का एकीकृत प्रबंधन जरूरी है। किसान फसल के मुख्य कीट व रोगों की पहचान करने के बाद विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश की गई दवाइयों का ही प्रयोग करें। हाल ही में कपास की फसल का नष्ट होने में किसानों द्वारा बिना कृषि वैज्ञानिकों की सिफारिश के फसल पर कीटनाशकों के मिश्रणों का प्रयोग करना एक कारण सामने आया है, जिससे कपास की फसल में नमी एवं पोषण के चलते समस्या बढ़ी है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय
समाचार पत्र का नाम........पंजाब केसरी........
दिनांक 5.9.2020 पृष्ठ संख्या......3......कॉलम......6.7......

सफेद मक्खी के अनुकूल मौसम, किसान फसल की करें निगरानी

हिसार, 4 सितम्बर (ब्यूरो): हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने बताया कि इस साल मौसम सफेद मक्खी के अनुकूल है, अगर समय पर आवश्यकतानुसार बारिश नहीं होगी तो इसका प्रकोप और भी बढ़ सकता है इसलिए किसान अपनी फसलों का विशेष ध्यान रखें और समय-समय पर लक्षण दिखाई देते ही कृषि वैज्ञानिकों से परामर्श करते रहें। कृषि वैज्ञानिकों के अनुसार पत्तों पर छिड़काव के रूप में 2.5 किलोग्राम यूरिया प्रति 100 लीटर पानी या पोटैशियम नाइट्रेट (13-0-45) की 2.0 किलोग्राम मात्रा को 200 लीटर पानी की दर से प्रति एकड़ में आवश्यकतानुसार बारी-बारी से प्रयोग करें। इसके अलावा सफेद मक्खी के लिए स्पाइरोमेसिफेन (ऑबरोन) 22.9 एस.सी. की 240 मिलीलीटर मात्रा या नीम आधारित कीटनाशक (निम्बिसीडीन/अचूक) की 1.0 लीटर मात्रा या पाइरीप्रोक्सीफेन (डायटा)10 ई.सी. की 400 मिलीलीटर मात्रा को 200-250 लीटर पानी की दर से एक एकड़ में आवश्यकतानुसार बारी-बारी से पौधों पर निचली पत्तियों तक छिड़काव करें। यदि कपास के पत्ते ज्यादा काले दिखाई दें तो कॉपर ऑक्सिक्लोराइड की 600 ग्राम मात्रा को 200 लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।

पेराविल्ट बीमारी के संभावित इलाकों में कोबाल्ट क्लोराइड की 2.0 ग्राम मात्रा को 200 लीटर पानी की दर से एक एकड़ में लक्षण दिखाई देने के 24 से 48 घंटों के अंदर छिड़काव करें। जहां सिंचाई या बारिश के बाद ज्यादातर पौधे मुरझा जाते हैं तो उन क्षेत्रों में इस बीमारी की संभावना होती है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम....दैनिक भास्कर....

दिनांक ..5.9.2020.. पृष्ठ संख्या....2.... कॉलम....5....

स्टार्टअप्स के लिए ऑनलाइन बताए मार्केटिंग के टिप्स

हिसार | चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में स्थापित एबिक सेंटर में स्टार्टअप्स के लिए चल रही वेबिनार की सीरीज में आयोजित दूसरे वेबिनार का समापन हो गया है। वेबिनार के दौरान प्रतिभागियों को स्ट्रैटेजिक मार्केटिंग फॉर स्टार्टअप्स व प्रोसेसिंग ऑफ मिल्क एंड मीट प्रोडक्ट्स के बारे में जानकारी दी गई। वेबिनार के मुख्य वक्ता दिल्ली स्थित इंक्युबेशन सेंटर के के सीईओ डॉ. वीके अरोड़ा ने स्ट्रैटेजिक मार्केटिंग के अहम् पहलुओं के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि एक स्टार्टअप्स के लिए मार्केटिंग स्ट्रैंथ और निवेश की व्यवस्था बहुत महत्वपूर्ण पहलू हैं। विपणन वैकल्पिक निवेश निधि प्राप्त करने और निवेश को प्रेरित करने में भी सहायता करता है। उन्होंने विपणन के सभी क्षेत्रों के बारे में जानकारी दी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम........पंजाब केसरी........

दिनांक 5.9.2020 पृष्ठ संख्या 4 कॉलम 4

स्टार्टअप्स के लिए ऑनलाइन बताए स्ट्रैटेजिक मार्कीटिंग के टिप्स

हिसार, 4 सितम्बर (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में स्थापित एबिक सैंटर में स्टार्टअप्स के लिए जारी ऑनलाइन वैबिनार की सीरीज में आयोजित दूसरे वैबिनार का समापन हो गया है। वैबिनार के दौरान प्रतिभागियों को स्ट्रैटेजिक मार्कीटिंग फॉर स्टार्टअप्स व प्रोसैसिंग ऑफ मिल्क एंड मीट प्रोडक्ट्स के बारे में विस्तृत रूप से जानकारी दी गई। वैबिनार के मुख्य वक्ता दिल्ली स्थित इंक्युबेशन सैंटर के सी.ई.ओ. डा. वी.के. अरोड़ा ने स्ट्रैटेजिक मार्कीटिंग के बारे में जानकारी देते हुए इसके अहम पहलुओं के बारे में बताया।

उन्होंने कहा कि एक स्टार्टअप्स के लिए मार्कीटिंग स्ट्रैंथ और निवेश की व्यवस्था बहुत ही महत्वपूर्ण पहलू है। विपणन वैकल्पिक निवेश निधि प्राप्त करने और निवेश को प्रेरित करने में भी सहायता करता है। उन्होंने विपणन के सभी क्षेत्रों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। वैबिनार के दूसरे सत्र में वक्ता लाला लाजपत राय पशु चिकित्सा एवं विज्ञान विश्वविद्यालय के लाइव स्टॉक विभाग के अध्यक्ष डा. सत्यवीर अहलावत ने दूध और मीट से बने उत्पादों की प्रक्रिया के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम........अमर उजाला........

दिनांक 5.9.2020 पृष्ठ संख्या........4........कॉलम........8........

स्टार्टअप के लिए बताए स्ट्रैटजिक मार्केटिंग के टिप्स

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में स्थापित एबिक सेंटर में स्टार्टअप्स के लिए आयोजित हुए वेबिनार में प्रतिभागियों को स्ट्रैटजिक मार्केटिंग फॉर स्टार्टअप व प्रोसेसिंग ऑफ मिल्क एंड मीट प्रोडक्ट्स के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई। वेबिनार में दिल्ली स्थित इंक्युबेशन सेंटर के सीईओ डॉ. वीके अरोड़ा मुख्य वक्ता के रूप में शामिल हुए।

डॉ. अरोड़ा ने कहा कि एक स्टार्टअप के लिए मार्केटिंग स्ट्रेंथ और निवेश की व्यवस्था बहुत ही महत्वपूर्ण पहलू है। विपणन वैकल्पिक निवेश निधि प्राप्त करने और निवेश को प्रेरित करने में भी सहायता करता है। उन्होंने विपणन के सभी क्षेत्रों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। वेबिनार के दूसरे सत्र में वक्ता लाला लाजपतराय पशु चिकित्सा एवं विज्ञान विश्वविद्यालय के लाइव स्टॉक विभाग के अध्यक्ष डॉ. सत्यवीर अहलावत ने दूध और मीट से बने उत्पादों की प्रक्रिया के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि जो भी प्रोडक्ट दूध या मीट से तैयार होते हैं वे न्यूट्रिशन और विटामिन से भरपूर होते हैं। उसमें कैलोरी की मात्रा भी बहुत कम होती है। इस अवसर पर एबिक सेंटर की नोडल अधिकारी डॉ. सीमा रानी, प्रशासनिक अधिकारी निशा मलिक फौगाट व तकनीकी प्रबंधक मैनेजर अर्पित तनेजा भी उपस्थित थीं। ब्यूरो

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.......अमर उजाला.......

दिनांक 5.9.2020 पृष्ठ संख्या 4 कॉलम 7-8

25 साल बाद मिला न्याय, बोर्ड चेयरमैन एचएयू में बने प्रोफेसर

एचएयू की बैठक में पांच सितंबर 2010 से उन्हें प्रोफेसर माना

अमर उजाला ब्यूरो

भिवानी। पिछले 25 साल से न्याय के लिए संघर्ष करने वाले हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड के चेयरमैन डॉ. जगबीर सिंह को आखिरकार न्याय मिला। एचएयू हिसार ने उन्हें प्रोफेसर पदोन्नत किया है। एचएयू हिसार में हुई बैठक में उन्हें पांच सितंबर 2010 से प्रोफेसर माना है। प्रोफेसर बनाए जाने पर बोर्ड चेयरमैन डॉ. जगबीर सिंह ने एचएयू के वाइस चांसलर डॉ. समर सिंह व रजिस्ट्रार प्रो. बलदेवराज कंबोज का आभार जताया।

हरियाणा शिक्षा बोर्ड के चेयरमैन डॉ. जगबीर सिंह ने पिछले दिनों कोर्ट फैसले के बाद उन्होंने जिला विस्तार विशेषज्ञ के रूप में ज्वाइन किया था। 25 साल पहले इंटरव्यू पास करने के बावजूद उनका इस पद पर सिलेक्शन नहीं किया गया था। इसके बाद उन्होंने 25 साल तक लड़ाई लड़ी। कोर्ट के आदेश पर उन्हें 1995 के वरिष्ठता के हिसाब से ही सभी लाभ एचएयू में दिए गए।

1995 में एचएयू में जिला विस्तार विशेषज्ञ, पशु विज्ञानी की पोस्ट पर डॉ. जगबीर सिंह ने आवेदन किया था। डॉ. जगबीर सिंह पीएचडी है। नियमानुसार पीएचडी आवेदक को 10 अंक दिए जाते हैं। मेरिट में इन्हें नजरअंदाज किया गया। जिसके बाद उन्होंने कोर्ट का दरवाजा खटखटाया। कोर्ट ने दोबारा मेरिट सूची तैयार करने के निर्देश दिए गए। उन्होंने बताया कि इसके खिलाफ उन्होंने केस किया था। 1995 से 2014 तक केस चला। कोर्ट ने मामले को डिसमिस कर दिया। इसके बाद हाईकोर्ट में दोबारा एलपीए (लेटर पेटेंट अपील) की। इसके बाद केस दोबारा खुला। पिछले वर्ष उनके पक्ष में फैसला हुआ। कोर्ट ने पूर्व की भर्ती को भी बनाए रखा। साथ ही उन्हें इस पद पर ज्वाइन कराने के निर्देश दिए। अब एचएयू की बैठक में उन्हें प्रोफेसर बनाया गया है। वर्ष 2010 से उन्हें प्रोफेसर माना गया है। बोर्ड चेयरमैन को फोन पर, सोशल मीडिया पर बधाइयां मिल रही है।

डॉ. जगबीर सिंह को मिठाई खिलाते एचएयू के रजिस्ट्रार। -संवाद

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम........दैनिक भास्कर........

दिनांक 4.9.2020 पृष्ठ संख्या.....3..... कॉलम.....7-8.....

फलों में आधुनिक उत्पादन तकनीक' पर वेबिनार आज

हिसार | उपोष्ण कटिबंधीय फलों में आधुनिक उत्पादन तकनीक विषय पर तीन दिवसीय ऑनलाइन वेबिनार 4 से 6 सितम्बर तक होगा। वेबिनार में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के विभिन्न वैज्ञानिकों द्वारा व्याख्यान दिए जाएंगे। यह जानकारी देते हुए एचएयू के अनुसंधान निदेशक व वेबिनार के आयोजक सचिव डॉ. अजय यादव ने बताया कि वेबिनार में चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार व महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय, करनाल के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह बतौर मुख्यातिथि शामिल होंगे। एचएयू के विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. विजय अरोड़ा ने बताया कि इस वेबिनार का आयोजन 'राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना' के सौजन्य से किया जाएगा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम......दैनिक भास्कर......

दिनांक 5.9.2020 पृष्ठ संख्या......4......कॉलम......5......

स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम की प्रवेश परीक्षा में एचएयू देगा पानी की बोतल

हिसार| एचएयू में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम की 6 सितम्बर से होने वाली प्रवेश परीक्षा को लेकर एचएयू प्रशासन ने पूरी तैयारी कर ली है। कोरोना से बचाव के लिए इस बार परीक्षार्थियों को कमरे में प्रवेश करने से पहले पानी की बोतल दी जाएगी। परीक्षार्थियों को बाहर निकलने की अनुमति नहीं होगी। प्रवेश का समय दो घंटे का होगा। पहले दिन करीब 900 छात्र परीक्षा देंगे। हाल ही में चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय प्रशासन ने कोरोना के चलते स्नातकोत्तर और पीएचडी प्रोग्रामों में एडमिशन के लिए परीक्षा की तिथियां चार दिन में विभाजित कर तय कर दी थी। 6 सितंबर से परीक्षाएं होंगी। एग्जाम में करीब 3500 छात्र एवं छात्राएं शामिल होंगी। डीन प्रोफेसर आशा क्वात्रा ने बताया कि परीक्षा की सभी तैयारी पूरी कर ली गई हैं। पानी की बोतल का भी इंतजाम किया गया है। प्रयास रहेगा कि परीक्षार्थियों को किसी भी तरह की परेशानी न होने दी जाए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम........नित्य शक्ति टाइम्स........

दिनांक 4.9.2020 पृष्ठ संख्या........—........कॉलम........—........

कपास की फसल में कीट व रोगों का एकीकृत प्रबंधन जरूरी : वीसी

हकृवि में ऑनलाइन वेबिनार आयोजित, कृषि वैज्ञानिकों ने कपास के मुख्य रोगों के लक्षण व समाधान बताए

नित्य शक्ति टाइम्स न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में पौध प्रजनन एवं आनुवांशिकी विभाग के कपास अनुभाग द्वारा एक ऑनलाइन वेबिनार का आयोजन किया गया। वेबिनार का मुख्य विषय वर्तमान में 'कपास फसल में कीट और रोगों का एकीकृत प्रबंधन' था। वेबिनार के शुभारंभ अवसर पर ऑनलाइन किसानों व कृषि वैज्ञानिकों को संबोधित करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि कपास की फसल में बेहतर उत्पादन के लिए कीट व रोगों का एकीकृत प्रबंधन जरूरी है। उन्होंने कहा कि किसान फसल के मुख्य कीट व रोगों की पहचान करने के बाद विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश की गई दवाइयों का ही प्रयोग करें। इसके अलावा फसल में कृषि वैज्ञानिकों की सलाह के बिना कीटनाशकों का छिड ?াव नुकसानदायक हो सकता है।

हाल ही में कपास की फसल का नष्ट होने में किसानों द्वारा बिना कृषि वैज्ञानिकों की सिफारिश के फसल पर कीटनाशकों के मिश्रणों का प्रयोग करना एक कारण सामने आया है, जिससे कपास की फसल में नमी एवं पौषण के चलते समस्या बढ़ी है। वेबिनार के संयोजक व आनुवांशिकी एवं पौध्र प्रजनन विभाग के अध्यक्ष डॉ. अशोक कुमार छाबड़ा ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। उन्होंने बताया कि इस वेबिनार का आयोजन कपास की फसल में आने वाले कीटों व बिमारियों को ध्यान में रखते हुए विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत की देखरेख में आयोजित किया गया। कपास वैज्ञानिक डॉ. ओमेन्द्र सांगवान ने मंच का ऑनलाइन संचालन किया एवं धन्यवाद प्रस्ताव पारित किया। वेबिनार के दौरान संदीप, अक्षय कुमार,तेजराम बघेल, अनिल, दीपक आदि किसान व कृषि अधिकारियों डॉ. अरूण यादव, डॉ. अजय यादव, डॉ. कुसुम चौधरी, डॉ. मंदीप राठी आदि ने विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों से कपास की फसल में मौजूदा समय में आई समस्याओं को लेकर सवाल भी किए, जिनका कृषि वैज्ञानिकों द्वारा बेहतर तरीके से जवाब दिया गया।

कृषि वैज्ञानिकों की सलाह का रखें विशेष ध्यान

अतिरिक्त अनुसंधान निदेशक डॉ. नीरज कुमार ने कहा कि कपास हरियाणा प्रदेश की एक महत्वपूर्ण नगदी फसल है। इसलिए किसानों को इस फसल में कृषि वैज्ञानिकों द्वारा समय-समय पर दी जाने वाली सलाह व कीटनाशकों को लेकर की गई सिफारिशों का विशेष ध्यान रखना चाहिए। कीट वैज्ञानिक डॉ. अनिल जाखड़ ने कपास में आने वाले कीटों के बारे में विस्तार से बताते हुए कहा कि कपास कि फसल में रस चूसने वाले कीड़ों में सफेद मक्खी, थ्रिप्स व हरा तेला मुख्य हैं जो फसल को नुकसान पहुचाते हैं। उन्होनें बताया कि इनमें सफेद मक्खी सबसे ज्यादा नुकसान पहुचाती है। पौद्य रोग विशेषज्ञ डॉ. मनमोहन ने कपास फसल की बीमारियों के बारे में बताया। उन्होनें बताया कि कपास में मुख्य रोग जड़ गलन, पैराविल्ट, पत्ता मरोड़ रोग एवं टिंडा गलन रोग हैं। सस्य वैज्ञानिक डॉ. करमल मलिक ने एकीकृत पोषक तत्व प्रबर्धन पर अपना व्याख्यान दिया तथा विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश की गई खादों एवं उर्वरकों की मात्रा के अनुसार फसल में डालने के बारे में चर्चा की।

सफेद मक्खी के अनुकूल है मौसम

कृषि वैज्ञानिकों ने बताया कि इस साल मौसम सफेद मक्खी के अनुकूल है, अगर समय पर आवश्यकतानुसार बारिश नहीं होगी तो इसका प्रकोप और भी बढ़ सकता है। इसलिए किसान अपनी फसलों का विशेष ध्यान रखें और समय-समय पर लक्षण दिखाई देते ही कृषि वैज्ञानिकों से परामर्श करते रहें। जहां सिंचाई या बारिश के बाद ज्यादातर पौधे मुरझा जाते हैं तो उन क्षेत्रों में इस बीमारी की संभावना होती है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम........पांच बजे........

दिनांक 4.9.2020 पृष्ठ संख्या........ कॉलम........

हकृवि में ऑनलाइन वेबिनार आयोजित, कृषि वैज्ञानिकों ने कपास के मुख्य रोगों के लक्षण व समाधान बताए

कपास की फसल में कीट व रोगों का एकीकृत प्रबंधन जरूरी : प्रो. समर सिंह

पांच बजे ब्यूरा

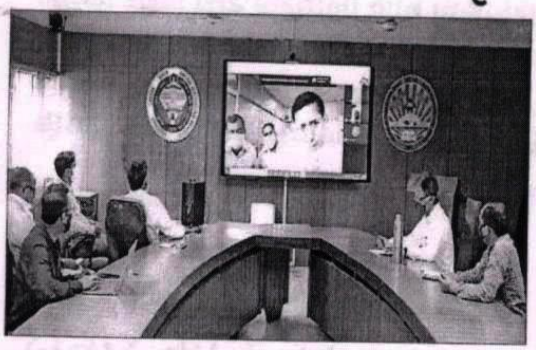

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में पौधं प्रजनन एवं आनुवांशिकी विभाग के कपास अनुभाग द्वारा एक ऑनलाइन वेबिनार का आयोजन किया गया। वेबिनार का मुख्य विषय वर्तमान में 'कपास फसल में कीट और रोगों का एकीकृत प्रबंधन' था। वेबिनार के शुभारंभ अवसर पर ऑनलाइन किसानों व कृषि वैज्ञानिकों को संबोधित करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि कपास की फसल में बेहतर उत्पादन के लिए कीट व रोगों का एकीकृत प्रबंधन जरूरी है। उन्होंने कहा कि किसान फसल के मुख्य कीट व रोगों की पहचान करने के बाद विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश की गई दवाइयों का ही प्रयोग करें। इसके अलावा फसल में कृषि वैज्ञानिकों की सलाह के बिना कीटनाशकों का छिड़काव नुकसानदायक हो सकता है। हाल ही में कपास की फसल का नष्ट होने में किसानों द्वारा बिना कृषि वैज्ञानिकों की सिफारिश के फसल पर कीटनाशकों के मिश्रणों का प्रयोग करना एक कारण सामने आया है, जिससे कपास की फसल में नमी एवं पोषण के चलते समस्या बढ़ी है। वेबिनार के संयोजक व आनुवांशिकी एवं पौधा प्रजनन विभाग के अध्यक्ष डॉ. अशोक कुमार छाबड़ा ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। उन्होंने बताया कि इस वेबिनार का आयोजन कपास की फसल में आने वाले कीटों व बिमारियों को ध्यान में रखते हुए विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत की देखरेख में आयोजित किया गया। कपास वैज्ञानिक डॉ. ओमेन्द्र सांगवान ने मंच का ऑनलाइन संचालन किया एवं धन्यवाद प्रस्ताव पारित किया। वेबिनार के दौरान संदीप, अक्षय कुमार,तेजराम बघेल, अनिल, दीपक आदि किसान व कृषि अधिकारियों डॉ. अरूण यादव, डॉ. अजय यादव, डॉ. कुसुम चौधरी, डॉ. मंदीप राठी आदि ने विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों से कपास की फसल में मौजूदा समय में आई समस्याओं को लेकर सवाल भी किए, जिनका कृषि वैज्ञानिकों द्वारा बेहतर तरीके से जवाब दिया गया।

कृषि वैज्ञानिकों की सलाह व सिफारिशों का रखें विशेष ध्यान

अतिरिक्त अनुसंधान निदेशक डॉ. नीरज कुमार ने कहा कि कपास हरियाणा प्रदेश की एक महत्वपूर्ण नगदी फसल है। इसलिए किसानों को इस फसल में कृषि वैज्ञानिकों द्वारा समय-समय पर दी जाने वाली सलाह व कीटनाशकों को लेकर की गई सिफारिशों का विशेष ध्यान रखना चाहिए। कीट वैज्ञानिक डॉ. अनिल जाखड़ ने कपास में आने वाले कीटों के बारे में विस्तार से बताते हुए कहा कि कपास कि फसल में रस चूसने वाले कीड़ों में सफेद मक्खी, थ्रिप्स व हरा तेला मुख्य है जो फसल को नुकसान पहुचाते हैं। उन्होने बताया कि इनमें सफेद मक्खी सबसे ज्यादा नुकसान पहुचाती है। पौध रोग विशेषज्ञ डॉ. मनमोहन ने कपास फसल की बीमारियों के बारे में बताया। उन्होनें बताया कि कपास में मुख्य रोग जड़ गलन, पैराविल्ट, पत्ता मरोड़ रोग एवं टिंडा गलन रोग हैं। रेतीली भूमि में पैराविल्ट का प्रकोप ज्यादा होता है। सस्य वैज्ञानिक डॉ. करमल मलिक ने एकीकृत पोषक तत्व प्रबधंन पर अपना व्याख्यान दिया तथा विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश की गई खादों एवं उर्वरकों की मात्रा के अनुसार फसल में डालने के बारे में चर्चा की।

सफेद मक्खी के अनुकूल है मौसम, किसान फसल की करें निगरानी

कृषि वैज्ञानिकों ने बताया कि इस साल मौसम सफेद मक्खी के अनुकूल है, अगर समय पर आवश्यकतानुसार बारिश नहीं होगी तो इसका प्रकोप और भी बढ़ सकता है। इसलिए किसान अपनी फसलों का विशेष ध्यान रखें और समय-समय पर लक्षण दिखाई देते ही कृषि वैज्ञानिकों से परामर्श करते रहें। कृषि वैज्ञानिकों के अनुसार पत्तों पर छिड़काव के रूप में 2.5 किलोग्राम यूरिया प्रति 100 लीटर पानी या पोटेशियम नाइट्रेट(13-0-45) की 2.0 किलोग्राम मात्रा को 200 लीटर पानी की दर से प्रति एकड़ में आवश्यकतानुसार बारी-बारी से प्रयोग करें। इसके अलावा सफेद मक्खी के लिए स्पाइरोमेसिफेन (ऑबरोन) 22.9 एस.सी. की 240 मिलीलीटर मात्रा या नीम आधारित कीटनाशक (निम्बिसीडीन/ अचूक) की 1.0 लीटर मात्रा या पाइरीप्रोक्सीफेन(डायटा)10 ई.सी. की 400 मिलीलीटर मात्रा को 200-250 लीटर पानी की दर से एक एकड़ में आवश्यकतानुसार बारी-बारी से पौधों पर निचली पत्तियों तक छिड़काव करें। यदि कपास के पत्ते ज्यादा काले दिखाई दें तो कॉपर ऑक्सिक्लोराइड की 600 ग्राम मात्रा को 200 लीटर पानी की दर से छिड़काव करें। पैराविल्ट बीमारी के संभावित इलाकों में कोबाल्ट क्लोराइड की 2.0 ग्राम मात्रा को 200 लीटर पानी की दर से एक एकड़ में लक्षण दिखाई देने के 24 से 48 घंटों के अंदर छिड़काव करें। जहां सिंचाई या बारिश के बाद ज्यादातर पौधे मुरझा जाते हैं तो उन क्षेत्रों में इस बीमारी की संभावना होती है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम......पल पल......

दिनांक ..5.9.2020.. पृष्ठ संख्या......—...... कॉलम......—......

कपास की फसल में कीट व रोगों का एकीकृत प्रबंधन जरूरीः प्रोफेसर समर सिंह

पल पल न्यूजः हिसार, 4 सितंबर। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में पौध प्रजनन एवं आनुवांशिकी विभाग के कपास अनुभाग द्वारा एक ऑनलाइन वेबिनार का आयोजन किया गया। वेबिनार का मुख्य विषय वर्तमान में 'कपास फसल में कीट और रोगों का एकीकृत प्रबंधन' था। वेबिनार के शुभारंभ अवसर पर ऑनलाइन किसानों व कृषि वैज्ञानिकों को संबोधित करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि कपास की फसल में बेहतर उत्पादन के लिए कीट व रोगों का एकीकृत प्रबंधन जरूरी है। उन्होंने कहा कि किसान फसल के मुख्य कीट व रोगों की पहचान करने के बाद विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश की गई दवाइयों का ही प्रयोग करें। इसके अलावा फसल में कृषि वैज्ञानिकों की सलाह के बिना कीटनाशकों का छिड़काव नुकसानदायक हो सकता है। हाल ही में कपास की फसल का नष्ट होने में किसानों द्वारा बिना कृषि वैज्ञानिकों की सिफारिश के फसल पर कीटनाशकों के मिश्रणों का प्रयोग करना एक कारण सामने आया है, जिससे कपास की फसल में नमी एवं पौषण के चलते समस्या बढ़ी है। वेबिनार के संयोजक व आनुवाशिकी एवं पौद्य प्रजनन विभाग के अध्यक्ष डॉ. अशोक कुमार छाबड़ा ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। उन्होंने बताया कि इस वेबिनार का आयोजन कपास की फसल में आने वाले कीटों व बिमारियों को ध्यान में रखते हुए विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत की देखरेख में आयोजित किया गया। कपास वैज्ञानिक डॉ. ओमेन्द्र सांगवान ने मंच का ऑनलाइन संचालन किया एवं धन्यवाद प्रस्ताव पारित किया। वेबिनार के दौरान संदीप, अक्षय कुमार,तेजराम बघेल, अनिल, दीपक आदि किसान व कृषि अधिकारियों डॉ. अरूण यादव, डॉ. अजय यादव, डॉ. कुसुम चौधरी, डॉ. मंदीप राठी आदि ने विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों से कपास की फसल में मौजूदा समय में आई समस्याओं को लेकर सवाल भी किए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम ....सच कहूँ...........

दिनांक 5.9.2020 पृष्ठ संख्या ....—.......... कॉलम ....—..........

कपास की फसल में कीट व रोगों का एकीकृत प्रबंधन जरूरी : समर सिंह

हिसार (सच कहूँ न्यूज)। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में पौध प्रजनन एवं आनुवांशिकी विभाग के कपास अनुभाग द्वारा एक ऑनलाइन वेबिनार का आयोजन किया गया। वेबिनार का मुख्य विषय वर्तमान में 'कपास फसल में कीट और रोगों का एकीकृत प्रबंधन' था। वेबिनार के शुभारंभ अवसर पर ऑनलाइन किसानों व कृषि वैज्ञानिकों को संबोधित करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि कपास की फसल में बेहतर उत्पादन के लिए कीट व रोगों का एकीकृत प्रबंधन जरूरी है। उन्होंने कहा कि किसान फसल के मुख्य कीट व रोगों की पहचान करने के बाद विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश की गई दवाइयों का ही प्रयोग करें। इसके अलावा फसल में कृषि वैज्ञानिकों की सलाह के बिना कीटनाशकों का छिड़काव नुकसानदायक हो सकता है। हाल ही में कपास की फसल का नष्ट होने में किसानों द्वारा बिना कृषि वैज्ञानिकों की सिफारिश के फसल पर कीटनाशकों के मिश्रणों का प्रयोग करना एक कारण सामने आया है, जिससे कपास की फसल में नमी एवं पौषण के चलते समस्या बढ़ी है। कपास वैज्ञानिक डॉ. ओमेन्द्र सांगवान ने मंच का ऑनलाइन संचालन किया एवं धन्यवाद प्रस्ताव पारित किया। वेबिनार के दौरान संदीप, अक्षय कुमार,तेजराम बघेल, अनिल, दीपक आदि किसान व कृषि अधिकारियों डॉ. अरूण यादव, डॉ. अजय यादव, डॉ. कुसुम चौधरी, डॉ. मंदीप राठी आदि ने विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों से कपास की फसल में मौजूदा समय में आई समस्याओं को लेकर सवाल भी किए, जिनका कृषि वैज्ञानिकों द्वारा बेहतर तरीके से जवाब दिया गया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम ....नभ स्पोर्ट........

दिनांक 4. 9. 2020 पृष्ठ संख्या ...–... कॉलम ...–...

कपास फसल पर बारे वैबिनार का आयोजन

हिसार/04 सितंबर/रिपोर्टर

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में पौध प्रजनन एवं आनुवांशिकी विभाग के कपास अनुभाग द्वारा वर्तमान में कपास फसल में कीट और रोगों का एकीकृत प्रबंधन पर आयोजित वैबिनार में कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि कपास की फसल में बेहतर उत्पादन के लिए कीट व रोगों का एकीकृत प्रबंधन जरूरी है। उन्होंने कहा कि किसान फसल के मुख्य कीट व रोगों की पहचान करने के बाद विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश की गई दवाइयों का ही प्रयोग करें। इसके अलावा फसल में कृषि वैज्ञानिकों की सलाह के बिना कीटनाशकों का छिड़काव नुकसानदायक हो सकता है। हाल ही में कपास की फसल का नष्ट होने में किसानों द्वारा बिना कृषि वैज्ञानिकों की सिफारिश के फसल पर कीटनाशकों के मिश्रणों का प्रयोग करना एक कारण सामने आया है, जिससे कपास की फसल में नमी एवं पौषण के चलते समस्या बढ़ी है। वैबिनार के संयोजक व अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के अध्यक्ष डॉ. अशोक कुमार छाबड़ा ने बताया कि इस वैबिनार का आयोजन कपास की फसल में आने वाले कीटों व बिमारियों को ध्यान में रखते हुए विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत की देखरेख में आयोजित किया गया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम........यूनिक हरियाणा........

दिनांक ...4-9-2020....पृष्ठ संख्या......—......कॉलम......—......

कपास की फसल में कीट व रोगों का एकीकृत प्रबंधन जरूरी : प्रोफेसर समर सिंह

September 4, 2020 • Rakesh • Hisar Local News

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में ऑनलाइन वेबिनार आयोजित, कृषि वैज्ञानिकों ने कपास के मुख्य रोगों के लक्षण व समाधान बताए

हिसार : 4 सितम्बर

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में पौध प्रजनन एवं आनुवांशिकी विभाग के कपास अनुभाग द्वारा एक ऑनलाइन वेबिनार का आयोजन किया गया। वेबिनार का मुख्य विषय वर्तमान में 'कपास फसल में कीट और रोगों का एकीकृत प्रबंधन' था। वेबिनार के शुभारंभ अवसर पर ऑनलाइन किसानों व कृषि वैज्ञानिकों को संबोधित करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि कपास की फसल में बेहतर उत्पादन के लिए कीट व रोगों का एकीकृत प्रबंधन जरूरी है। उन्होंने कहा कि किसान फसल के मुख्य कीट व रोगों की पहचान करने के बाद विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश की गई दवाइयों का ही प्रयोग करें। इसके अलावा फसल में कृषि

कृषि वैज्ञानिकों की सलाह व सिफारिशों का रखें विशेष ध्यान

अतिरिक्त अनुसंधान निदेशक डॉ. नीरज कुमार ने कहा कि कपास हरियाणा प्रदेश की एक महत्वपूर्ण नगदी फसल है। इसलिए किसानों को इस फसल में कृषि वैज्ञानिकों द्वारा समय-समय पर दी जाने वाली सलाह व कीटनाशकों को लेकर की गई सिफारिशों का विशेष ध्यान रखना चाहिए। कीट वैज्ञानिक डॉ. अनिल जाखड़ ने कपास में आने वाले कीटों के बारे में विस्तार से बताते हुए कहा कि कपास कि फसल में रस चूसने वाले कीड़ों में सफेद मक्खी, थ्रिप्स व हरा तेला मुख्य हैं जो फसल को नुकसान पहुचाते हैं। उन्होनें बताया कि इनमें सफेद मक्खी सबसे ज्यादा नुकसान पहुचाती है। पौद्य रोग विशेषज्ञ डॉ. मनमोहन ने कपास फसल की बीमारियों के बारे में बताया। उन्होनें बताया कि कपास में मुख्य रोग जड़ गलन, पैराविल्ट, पत्ता मरोड़ रोग एवं टिंडा गलन रोग हैं। रेतीली भूमि में पैराविल्ट का प्रकोप ज्यादा होता है। सस्य वैज्ञानिक डॉ. करमल मलिक ने एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन पर अपना व्याख्यान दिया तथा

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम ....नित्य शक्ति टाइम्स........

दिनांक ..4.9.2020.. पृष्ठ संख्या ......—...... कॉलम ......—......

स्टार्टअप्स के लिए ऑनलाइन बताए स्ट्रैटेजिक मार्केटिंग के टिप्स

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में ऑनलाइन वेबिनार संपन्न

नित्य शक्ति टाइम्स न्यूज

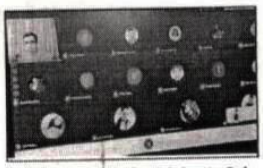

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में स्थापित एबिक सेंटर में स्टार्टअप्स के लिए जारी ऑनलाइन वेबिनार की सीरीज में आयोजित दूसरे वेबिनार का समापन हो गया है। वेबिनार के दौरान प्रतिभागियों को स्ट्रैटेजिक मार्केटिंग फॉर स्टार्टअप्स व प्रोसेसिंग ऑफ मिल्क एंड मीट प्रोडक्ट्स के बारे में विस्तृत रूप से जानकारी दी गई। वेबिनार के मुख्य वक्ता दिल्ली स्थित

इंक्युबेशन सेंटर के के सीईओ डॉ. वी.के. अरोड़ा ने स्ट्रैटेजिक मार्केटिंग के बारे में जानकारी देते हुए इसके अहम् पहलुओं के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि एक स्टार्टअप्स के लिए मार्केटिंग स्ट्रैंथ और निवेश की व्यवस्था बहुत ही महत्वपूर्ण पहलू हैं। विपणन वैकल्पिक निवेश निधि प्राप्त करने और निवेश को प्रेरित करने में भी सहायता करता है। उन्होंने विपणन के सभी क्षेत्रों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। वेबिनार के दूसरे सत्र में वक्ता लाला लाजपतराय पशु चिकित्सा एवं विज्ञान विश्वविद्यालय के लाइव स्टॉक विभाग के अध्यक्ष डॉ. सत्यवीर अहलावत ने दूध और मीट से बने उत्पादों की प्रक्रिया के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। उन्होंने बताया कि जो भी प्रोडक्ट दूध या मीट से तैयार होते हैं वे न्यूट्रिशन और विटामिन से भरपूर होते हैं। उसमें कैलोरी की मात्रा भी बहुत कम होती है। यहां दूध से कई तरह का पनीर व मिठाइयां तैयार की जाती हैं जो कि खाने में पौष्टिक होती हैं जिनमें कोई भी मिलावट नहीं की जाती। ऐसे ही मीट से भी अलग-अलग तरह के पकवान तैयार किए जाते हैं जैसे मीट टिक्की, बर्गर टिक्की, अचार आदि तैयार किया जाता है। इसके अलावा डॉ. अहलावत ने प्रतिभागियों को अलग-अलग पकवानों को तैयार करने की प्रोसेसिंग बताते हुए हाइजीनिक तरीके से सारे पकवानों को तैयार करने के बारे में भी जानकारी दी।

स्टार्टअप्स को आगे बढ़ने का मौका देता है एबिक

एबिक सेंटर की नोडल अधिकारी डॉ. सीमा रानी ने बताया कि एबिक के द्वारा युवाओं व उद्यमियों के लिए समय-समय पर इस प्रकार के वेबिनार व प्रशिक्षण आयोजित कर उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया जाता है। उन्होंने प्रतिभागियों को कृषि व्यवसाय में अपना भविष्य बनाने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने बताया कि इस इस ऑनलाइन वेबिनार में देशभर के अलावा विदेशों से भी प्रतिभागी शामिल हुए। उन्होंने बताया कि यह केंद्र उत्तर भारत का एकमात्र व देश का दूसरा केंद्र है जहां नए स्टार्टअप को आगे बढ़ने का मौका देता है और फाइनेंस, टेक्निकल, इंफ्रास्ट्रक्चर, मार्केटिंग इत्यादि सुविधाएं भी एक छत के नीचे उपलब्ध करवाता है। समय-समय पर कृषि को बढ़ावा देने के लिए कृषि मेला, बूट कैंप, कृषि संबंधित प्रशिक्षण आदि कार्यक्रम पंजीकृत इनक्यूबेटी के लिए करवाए जाते हैं। वेबिनार का संचालन एबिक के प्रशासनिक अधिकारी निशा मलिक फोगाट व तकनीकी प्रबंधक मैनेजर अर्पित तनेजा ने किया। उन्होंने सभी प्रतिभागियों व वक्ताओं का धन्यवाद किया। सभी प्रतियोगियों को ई-प्रमाण-पत्र दिए जाएंगे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम ......नभ छोर......

दिनांक ...5...9...2020...पृष्ठ संख्या ......—......कॉलम ......—......

स्ट्रैटेजिक मार्केटिंग फॉर स्टार्टअप्स व प्रोसेसिंग ऑफ मिल्क एंड मीट प्रोडक्ट्स पर वैबिनार

हिसार/04 सितंबर/रिपोर्टर

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में स्थापित एबिक सेंटर में स्टार्टअप्स के लिए जारी ऑनलाइन वैबिनार की सीरीज में आयोजित दूसरे वैबिनार में प्रतिभागियों को स्ट्रैटेजिक मार्केटिंग फॉर स्टार्टअप्स व प्रोसेसिंग ऑफ मिल्क एंड मीट प्रोडक्ट्स के बारे में जानकारी दी गई। वैबिनार के मुख्य वक्ता दिल्ली स्थित इंक्युबेशन सेंटर के के सीईओ डॉ. वीके अरोड़ा ने स्ट्रैटेजिक मार्केटिंग के अहम् पहलुओं के बारे में बताते हुए कहा कि एक स्टार्टअप्स के लिए मार्केटिंग स्ट्रैथ और निवेश की व्यवस्था बहुत ही महत्वपूर्ण पहलू हैं। विपणन वैकल्पिक निवेश निधि प्राप्त करने और निवेश को प्रेरित करने में भी सहायता करता है। उन्होंने विपणन के सभी क्षेत्रों के बारे में जानकारी दी। वैबिनार के दूसरे सत्र में वक्ता लाला लाजपतराय पशु चिकित्सा एवं विज्ञान विश्वविद्यालय के लाइव स्टॉक विभाग के अध्यक्ष डॉ. सत्यवीर अहलावत ने दूध और मीट से बने उत्पादों की प्रक्रिया के बारे में बताया कि जो भी प्रोडक्ट दूध या मीट से तैयार होते हैं वे न्यूट्रिशन और विटामिन से भरपूर होते हैं। उसमें कैलोरी की मात्रा भी बहुत कम होती है। यहां दूध से कई तरह का पनीर व मिठाइयां तैयार की जाती हैं जो कि खाने में पौष्टिक होती हैं जिनमें कोई भी मिलावट नहीं की जाती। ऐसे ही मीट से भी अलग.अलग तरह के पकवान तैयार किए जाते हैं जैसे मीट टिक्की, बर्गर टिक्की, अचार आदि तैयार किया जाता है। इसके अलावा डॉ. अहलावत ने प्रतिभागियों को अलग.अलग पकवानों को तैयार करने की प्रोसेसिंग बताते हुए हाइजीनिक तरीके से सारे पकवानों को तैयार करने के बारे में भी जानकारी दी। एबिक सेंटर की नोडल अधिकारी डॉ. सीमा रानी ने बताया कि एबिक के द्वारा युवाओं व उद्यमियों के लिए समय.समय पर इस प्रकार के वैबिनार व प्रशिक्षण आयोजित कर उन्हें आगे बढने के लिए प्रेरित किया जाता है। उन्होंने प्रतिभागियों को कृषि व्यवसाय में अपना भविष्य बनाने के लिए प्रोत्साहित किया। वैबिनार का संचालन एबिक के प्रशासनिक अधिकारी निशा मलिक फोगाट व तकनीकी प्रबंधक मैनेजर अर्पित तनेजा ने किया। उन्होंने सभी प्रतिभागियों व वक्ताओं का धन्यवाद किया। सभी प्रतियोगियों को ई.प्रमाण.पत्र दिए जाएंगे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम........सिटी पल्स........

दिनांक 4.9.2020 पृष्ठ संख्या........— कॉलम........—

एचएयू में ऑनलाइन वेबिनार आयोजित

कृषि वैज्ञानिकों ने कपास के मुख्य रोगों के लक्षण व समाधान बताए

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में पौध प्रजनन एवं आनुवांशिकी विभाग के कपास अनुभाग द्वारा एक ऑनलाइन वेबिनार का आयोजन किया गया। वेबिनार का मुख्य विषय वर्तमान में 'कपास फसल में कीट और रोगों का एकीकृत प्रबंधन' था। वेबिनार के शुभारंभ अवसर पर कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि कपास की फसल में बेहतर उत्पादन के लिए कीट व रोगों का एकीकृत प्रबंधन जरूरी है। उन्होंने कहा कि किसान फसल के मुख्य कीट व रोगों की पहचान करने के बाद विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश की गई दवाइयों का ही प्रयोग करें। इसके अलावा फसल में कृषि वैज्ञानिकों की सलाह के बिना कीटनाशकों का छिड़काव नुकसानदायक हो सकता है। हाल ही में कपास की फसल का नष्ट होने में किसानों द्वारा बिना कृषि वैज्ञानिकों की सिफारिश के फसल पर कीटनाशकों के मिश्रणों का प्रयोग करना एक कारण सामने आया है, जिससे कपास की फसल में नमी एवं पोषण के चलते समस्या बढ़ी है। वेबिनार के संयोजक व आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के अध्यक्ष डॉ. अशोक कुमार छाबड़ा ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। उन्होंने बताया कि इस वेबिनार का आयोजन कपास की फसल में आने वाले कीटों व बीमारियों को ध्यान में रखते हुए विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत की देखरेख में आयोजित किया गया। वेबिनार के दौरान संदीप, अक्षय कुमार,तेजराम बघेल, अनिल, दीपक आदि किसान व कृषि अधिकारियों डॉ. अरूण यादव, डॉ. अजय यादव, डॉ. कुसुम चौधरी, डॉ. मंदीप राठी आदि ने विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों से कपास की फसल में मौजूदा समय में आई समस्याओं को लेकर सवाल भी किए, जिनका कृषि वैज्ञानिकों द्वारा बेहतर तरीके से जवाब दिया गया।

हिसार। हरियाणा वेबिनार के दौरान प्रतिभागियों को संबोधित करते कृषि वैज्ञानिक व शामिल प्रतिभागी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम......पांच बजे......

दिनांक ...4.9.2020... पृष्ठ संख्या........—........ कॉलम........—........

स्टार्टअप्स के लिए ऑनलाइन बताए स्ट्रैटेजिक मार्केटिंग के टिप्स

हकृवि में ऑनलाइन वेबिनार संपन्न

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में स्थापित एबिक सेंटर में स्टार्टअप्स के लिए जारी ऑनलाइन वेबिनार की सीरीज में आयोजित दूसरे वेबिनार का समापन हो गया है। वेबिनार के दौरान प्रतिभागियों को स्ट्रैटेजिक मार्केटिंग फॉर स्टार्टअप्स व प्रोसेसिंग ऑफ मिल्क एंड मीट प्रोडक्ट्स के बारे में विस्तृत रूप से जानकारी दी गई। वेबिनार के मुख्य वक्ता दिल्ली स्थित इंक्युबेशन सेंटर के के सीईओ डॉ. वी.के. अरोड़ा ने स्ट्रैटेजिक मार्केटिंग के बारे में जानकारी देते हुए इसके अहम् पहलुओं के बारे में बताया।

उन्होंने कहा कि एक स्टार्टअप्स के लिए मार्केटिंग स्ट्रैंथ और निवेश की व्यवस्था बहुत ही महत्वपूर्ण पहलू हैं। विपणन वैकल्पिक निवेश निधि प्राप्त करने और निवेश को प्रेरित करने में भी सहायता करता है। उन्होंने विपणन के सभी क्षेत्रों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। वेबिनार के दूसरे सत्र में वक्ता लाला लाजपतराय पशु चिकित्सा एवं विज्ञान विश्वविद्यालय के लाइव स्टॉक विभाग के अध्यक्ष डॉ. सत्यवीर अहलावत ने दूध और मीट से बने उत्पादों की प्रक्रिया के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। उन्होंने बताया कि जो भी प्रोडक्ट दूध या मीट से तैयार होते हैं वे न्यूट्रिशन और विटामिन से भरपूर होते हैं। उसमें कैलोरी की मात्रा भी बहुत कम होती है। यहां दूध से कई तरह का पनीर व मिठाइयां तैयार की जाती हैं जो कि खाने में पौष्टिक होती हैं जिनमें कोई भी मिलावट नहीं की जाती। ऐसे ही मीट से भी अलग-अलग तरह के पकवान तैयार किए जाते हैं जैसे मीट टिक्की, बर्गर टिक्की, अचार आदि तैयार किया जाता है। इसके अलावा डॉ. अहलावत ने प्रतिभागियों को अलग-अलग पकवानों को तैयार करने की प्रोसेसिंग बताते हुए हाइजीनिक तरीके से सारे पकवानों को तैयार करने के बारे में भी जानकारी दी।

स्टार्टअप्स को आगे बढ़ने का मौका देता है एबिक

एबिक सेंटर की नोडल अधिकारी डॉ. सीमा रानी ने बताया कि एबिक के द्वारा युवाओं व उद्यमियों के लिए समय-समय पर इस प्रकार के वेबिनार व प्रशिक्षण आयोजित कर उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया जाता है। उन्होंने प्रतिभागियों को कृषि व्यवसाय में अपना भविष्य बनाने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने बताया कि इस इस ऑनलाइन वेबिनार में देशभर के अलावा विदेशों से भी प्रतिभागी शामिल हुए। उन्होंने बताया कि यह केंद्र उत्तर भारत का एकमात्र व देश का दूसरा केंद्र है जहां नए स्टार्टअप को आगे बढ़ने का मौका देता है और फाइनेंस, टेक्निकल, इंफ्रास्ट्रक्चर, मार्केटिंग इत्यादि सुविधाएं भी एक छत के नीचे उपलब्ध करवाता है। समय-समय पर कृषि को बढ़ावा देने के लिए कृषि मेला, बूट कैंप, कृषि संबंधित प्रशिक्षण आदि कार्यक्रम पंजीकृत इनक्यूबेटी के लिए करवाए जाते हैं। वेबिनार का संचालन एबिक के प्रशासनिक अधिकारी निशा मलिक फोगाट व तकनीकी प्रबंधक मैनेजर अर्पित तनेजा ने किया। उन्होंने सभी प्रतिभागियों व वक्ताओं का धन्यवाद किया। सभी प्रतियोगियों को ई-प्रमाण-पत्र दिए जाएंगे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम....पल पल....

दिनांक 4.9.2020 पृष्ठ संख्या.... — ....कॉलम.... — ....

सार समाचार

स्टार्टअप्स के लिए ऑनलाइन बताए स्ट्रैटेजिक मार्केटिंग के टिप्स

पल पल न्यूजः हिसार, 4 सितंबर। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में स्थापित एबिक सेंटर में स्टार्टअप्स के लिए जारी ऑनलाइन वेबिनार की सीरीज में आयोजित दूसरे वेबिनार का समापन हो गया है। वेबिनार के दौरान प्रतिभागियों को स्ट्रैटेजिक मार्केटिंग फॉर स्टार्टअप्स व प्रोसेसिंग ऑफ मिल्क एंड मीट प्रोडक्ट्स के बारे में विस्तृत रूप से जानकारी दी गई। वेबिनार के मुख्य वक्ता दिल्ली स्थित इंक्युबेशन सेंटर के के सीईओ डॉ. वी.के. अरोड़ा ने स्ट्रैटेजिक मार्केटिंग के बारे में जानकारी देते हुए इसके अहम् पहलुओं के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि एक स्टार्टअप्स के लिए मार्केटिंग स्ट्रैंथ और निवेश की व्यवस्था बहुत ही महत्वपूर्ण पहलू हैं। विपणन वैकल्पिक निवेश निधि प्राप्त करने और निवेश को प्रेरित करने में भी सहायता करता है। उन्होंने विपणन के सभी क्षेत्रों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। वेबिनार के दूसरे सत्र में वक्ता लाला लाजपतराय पशु चिकित्सा एवं विज्ञान विश्वविद्यालय के लाइव स्टॉक विभाग के अध्यक्ष डॉ. सत्यवीर अहलावत ने दूध और मीट से बने उत्पादों की प्रक्रिया के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। उन्होंने बताया कि जो भी प्रोडक्ट दूध या मीट से तैयार होते हैं वे न्यूट्रिशन और विटामिन से भरपूर होते हैं। उसमें कैलोरी की मात्रा भी बहुत कम होती है। यहां दूध से कई तरह का पनीर व मिठाइयां तैयार की जाती हैं जो कि खाने में पौष्टिक होती हैं जिनमें कोई भी मिलावट नहीं की जाती। ऐसे ही मीट से भी अलग-अलग तरह के पकवान तैयार किए जाते हैं जैसे मीट टिक्की, बर्गर टिक्की, अचार आदि तैयार किया जाता है। इसके अलावा डॉ. अहलावत ने प्रतिभागियों को अलग-अलग पकवानों को तैयार करने की प्रोसेसिंग बताते हुए हाइजीनिक तरीके से सारे पकवानों को तैयार करने के बारे में भी जानकारी दी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम........हिसार टुडे........

दिनांक ..4. 9. 2021....पृष्ठ संख्या........—........कॉलम........—........

स्टार्टअप्स के लिए ऑनलाइन बताए स्ट्रैटेजिक मार्केटिंग के टिप्स

वेबिनार में प्रतिभागियों को जानकारी देते वक्ता व शामिल प्रतिभागी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में ऑनलाइन वेबिनार संपन्न

टुडे न्यूज़ | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में स्थापित एबिक सेंटर में स्टार्टअप्स के लिए जारी ऑनलाइन वेबिनार की सीरीज में आयोजित दूसरे वेबिनार का समापन हो गया है। वेबिनार के दौरान प्रतिभागियों को स्ट्रैटेजिक मार्केटिंग फॉर स्टार्टअप्स व प्रोसेसिंग ऑफ मिल्क एंड मीट प्रोडक्ट्स के बारे में विस्तृत रूप से जानकारी दी गई। वेबिनार के मुख्य वक्ता दिल्ली स्थित इंक्युबेशन सेंटर के के सीईओ डॉ. वी.के. अरोड़ा ने स्ट्रैटेजिक मार्केटिंग के बारे में जानकारी देते हुए इसके अहम् पहलुओं के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि एक स्टार्टअप्स के लिए मार्केटिंग स्ट्रैंथ और निवेश की व्यवस्था बहुत ही महत्वपूर्ण पहलू हैं। विपणन वैकल्पिक निवेश निधि प्राप्त करने और निवेश को प्रेरित करने में भी सहायता करता है। उन्होंने विपणन के सभी क्षेत्रों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। वेबिनार के दूसरे सत्र में वक्ता लाला लाजपतराय पशु चिकित्सा एवं विज्ञान विश्वविद्यालय के लाइव स्टॉक विभाग के अध्यक्ष डॉ. सत्यवीर अहलावत ने दूध और मीट से बने उत्पादों की प्रक्रिया के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। उन्होंने बताया कि जो भी प्रोडक्ट दूध या मीट से तैयार होते हैं वे न्यूट्रिशन और विटामिन से भरपूर होते हैं। उसमें कैलोरी की मात्रा भी बहुत कम होती है। यहां दूध से कई तरह का पनीर व मिठाइयां तैयार की जाती हैं जो कि खाने में पौष्टिक होती हैं जिनमें कोई भी मिलावट नहीं की जाती। ऐसे ही मीट से भी अलग-अलग तरह के पकवान तैयार किए जाते हैं जैसे मीट टिक्की, बर्गर टिक्की, अचार आदि तैयार किया जाता है।

स्टार्टअप्स को आगे बढ़ने का मौका देता है एबिक

एबिक सेंटर की नोडल अधिकारी डॉ. सीमा रानी ने बताया कि एबिक के द्वारा युवाओं व उद्यमियों के लिए समय-समय पर इस प्रकार के वेबिनार व प्रशिक्षण आयोजित कर उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया जाता है। उन्होंने प्रतिभागियों को कृषि व्यवसाय में अपना भविष्य बनाने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने बताया कि इस इस ऑनलाइन वेबिनार में देशभर के अलावा विदेशों से भी प्रतिभागी शामिल हुए। उन्होंने बताया कि यह केंद्र उत्तर भारत का एकमात्र व देश का दूसरा केंद्र है जहां नए स्टार्टअप को आगे बढ़ने का मौका देता है और फाइनेंस, टेक्निकल, इंफ्रास्ट्रक्चर, मार्केटिंग इत्यादि सुविधाएं भी एक छत के नीचे उपलब्ध करवाता है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम....पीनिक हरियाणा....

दिनांक ...4. 9. 2020... पृष्ठ संख्या.....—.....कॉलम......—......

स्टार्टअप्स के लिए ऑनलाइन बताए स्ट्रैटेजिक मार्केटिंग के टिप्स , H.A.U में ऑनलाइन वेबिनार संपन्न

September 4, 2020 • Rakesh • Haryana News

हिसार: 4 सितम्बर
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में स्थापित एबिक सेंटर में स्टार्टअप्स के लिए जारी ऑनलाइन वेबिनार की सीरीज में आयोजित दूसरे वेबिनार का समापन हो गया है। वेबिनार के दौरान प्रतिभागियों को स्ट्रैटेजिक मार्केटिंग फॉर स्टार्टअप्स व प्रोसेसिंग ऑफ मिल्क एंड मीट प्रोडक्ट्स के बारे में विस्तृत रूप से जानकारी दी गई। वेबिनार के मुख्य वक्ता दिल्ली स्थित इंक्युबेशन सेंटर के के सीईओ डॉ. वी.के. अरोड़ा ने स्ट्रैटेजिक मार्केटिंग के बारे में जानकारी देते हुए इसके अहम् पहलुओं के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि एक स्टार्टअप्स के लिए मार्केटिंग स्ट्रैंथ और निवेश की व्यवस्था बहुत ही महत्वपूर्ण पहलू हैं। विपणन वैकल्पिक निवेश निधि प्राप्त करने और निवेश को प्रेरित करने में भी सहायता करता है। उन्होंने विपणन के सभी क्षेत्रों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। वेबिनार के

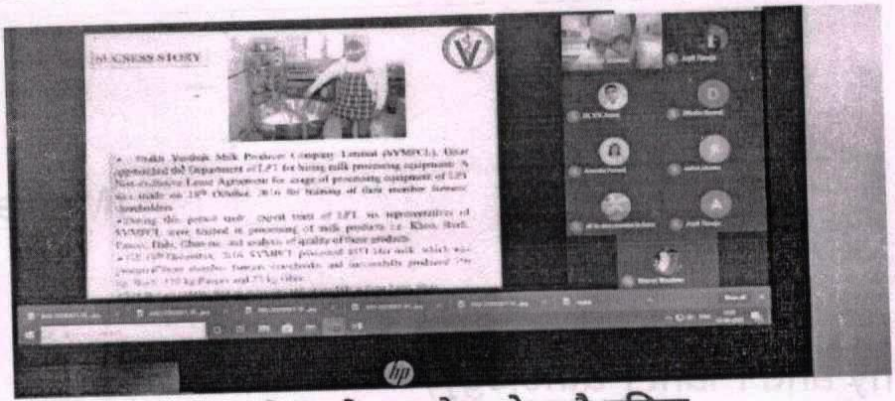

स्टार्टअप्स को आगे बढ़ने का मौका देता है एबिक

एबिक सेंटर की नोडल अधिकारी डॉ. सीमा रानी ने बताया कि एबिक के द्वारा युवाओं व उद्यमियों के लिए समय-समय पर इस प्रकार के वेबिनार व प्रशिक्षण आयोजित कर उन्हें आगे बढ़ने के लिए पे्ररित किया जाता है। उन्होंने प्रतिभागियों को कृषि व्यवसाय में अपना भविष्य बनाने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने बताया कि इस इस ऑनलाइन वेबिनार में देशभर के अलावा विदेशों से भी प्रतिभागी शामिल हुए। उन्होंने बताया कि यह केंद्र उत्तर भारत का एकमात्र व देश का दूसरा केंद्र है जहां नए स्टार्टअप को आगे बढ़ने का मौका देता है और फाइनेंस, टेक्निकल, इंफ्रास्ट्रक्चर, मार्केटिंग इत्यादि सुविधाएं भी एक छत के नीचे उपलबध करवाता है। समय-समय पर कृषि को बढ़ावा